

CHAPTER - 2
 Review Questions no: 8
 Sutra 2-26 to 2-44
 तत्त्वार्थसिद्धयन्त 12-13

Key

due date: 9/3/2020

True/False

तेजस्य च कर्मण्यु शरीर

- (1) F जल परभवमां जल त्वारे नेनी साद्यै कामण्यु शरीर न रोय
- (2) F विग्रह गतिमां, जके न समयमां उच्यते स्थाने परीय जय
- (3) F वैद्विद्य शरीर औदारिक शरीर कर्तां जेहुं नु रोय (अधिहुं गति)
- (4) I नरकमां रवेना जलो नपुंसक ही.
- (5) I विकलेन्द्रिय जल जेहे जेधन्द्रिय-नेधन्द्रिय-रुने यहेरिन्द्रिय,
- (6) I एधिनो वन्म योम न करेवाय हो.
- (7) F माथी साद्यै वर्तमानमां मात्र जे न शरीर हो (औदारिक)
- (8) I वैद्विद्य एने ज्वाहरेक शरीर जोक साद्यै न रोय (तेजस्य कर्मण्यु)
- (9) I कामण्यु शरीर अप्रति धानी हो. (परवन्ने पक्षे लोकात्)
- (10) I तेजस्य एने कामण्यु शरीर हरेक संसारी जवनी रोय
- (11) I अमिष्य जल माथे तेजस्य एने कामण्यु शरीर अननकाए सुध रोय (अवादि)
- (12) I तेजस्य एनी कामण्यु शरीरना कात्म प्रहेरौ ज्वाहरेक शरीर करतां अनंनगुहा हो.
- (13) F स्त्री-पुरुषना संलंके ही देतां जवना वन्म उपधान वन्म करेवाय गर्भिन
- (14) I सर्व जवानी कुल न न सभ योनि ही.
- (15) I नारक एने हेवनी अरिच योनि रोय हो.
- (16) I मनुष्यनी कुल योनि हेर सभ ही.
- (17) F वन्मना त्रु लोके ही संमुर्धन, गर्भिन एने वैद्विद्य उपधान
- (18) I मनुष्यको वन्म जरीयु करेवाय हो.
- * (19) F हेर पूर्वधरे हरेक मुनि ज्वाहरेक शरीर जवापी शके.
- (20) I तेजस्य एने कामण्यु शरीरनी गति संपूर्ध साकमां धवी शके ही.

* जैमिनी ज्वाहरेक लधि प्राप्त पध डोय ते न मुनि ज्वाहरेक शरीर जवापी शके.

P.140